ओशो रजनीश

भूमण्डल पर बीसबीं सदी की आध्यात्मिक क्रांति में ओशो कोहेनूर रत्न के समान है। भारत में इतने महान आत्मविज्ञानी का जन्म लेना बहुत आश्चर्य की बात है।

उन्होंने मूढ़ भावों से भरे हिन्दुस्तानियों को भाव संपत्ति, विशाल-दृक्पथ प्रदान कर एक नई जीवन रीति का दर्शन कराया। ध्यान की महत्ता को विश्व भर में फैलाया। वे नव्य ध्यान बुद्ध हैं।

उन्होंने भौतिक जीवन के सुमधुर सौरभ का विवरण बहुत अच्छी तरह दिया है। इहलोक में जीवन के शास्त्रवेत्ता है रजनीश। अपनी अद्‌भुत वाणी से, सहृदयता से, लोकज्ञान से उन्होंने दुनिया को हिला दिया। ऐसे लोकनायक ह रजनीश।

इस नवीन युग में यदि कुछ सुनना है तो रजनीश की वाणी को ही सुनना है। इनका लिखा हुआ साहित्य तो कम है परन्तु प्रवचन साहित्य तो हिमालय समान विशाल है। उनकी प्रकाशित पुस्तकों की संख्या लगभग छः सौ पचास है। उनकी अद्वितीय मधुर वाणी अनेकानेक ऑडियो और वीडियोकैसेट्स के माध्यम से हम सुन देख सकते हैं।

जो लोग रजनीश की अमृत वाणी को नहीं सुन पाते वे बदनसीब हैं। आत्मज्ञान का साक्षात् रूप है रजनीश। केवल साठ वर्ष जीकर भी ज़िन्दगी को कैसे जीना चाहिए, इसका अद्‌भुत विवरण उन्होंने दिया है।

धरती के पूरे आध्यात्मिक चरित्र में रजनीश से एक नएयुग का सूत्रपात हुआ। उनकी वाणा सुनने मात्र से ही मुक्ति मिल जाती है। चेहरा देखने मात्र से आत्मसंतोष प्राप्त होता है। वे एक ऐसे असाधारण समाजवादी हैं जिन्होंने दो व्यक्तियों के बीच की दीवार को गिरा दिया हैं। दो मतों के बीच के मूढ़ भेदभाव की उन्होंने आलोचना की है तथा दो जातियो तथा दो राष्ट्रां के बीच की सीमा रेखा को ध्वस्त कर दिया है नव्य युगकर्ता रजनीश ने।

पिरामिड स्पिरिचुअल सोसाइटी के ध्यानी और मास्टर्स के लिए अत्यन्त प्रिय आदर्श मूर्ति है-रजनीश।